CHAPTER 1 INTRODUCTION: WHAT, WHERE, HOW AND WHEN?

परिचय: क्या, कहाँ, कैसे और कब?
- रशीदा को आश्चर्य है कि लोग कैसे जान सकते हैं कि अतीत में क्या हुआ था।
- अतीत के बारे में पता लगाने के विभिन्न तरीकों पर चर्चा की गई है।

अतीत के बारे में जानना:
- **पांडुलिपियाँ**: ताड़ के पत्ते या सन्टी की छाल पर बहुत पहले लिखी गई पुस्तकें।
- **शिलालेख**: पत्थर या धातु पर लेख, जिसमें राजाओं के आदेश और जीत के रिकॉर्ड शामिल हैं।
- **पुरातत्व**: इमारतों, औजारों, हथियारों, बर्तनों, आभूषणों और सिक्कों जैसे अवशेषों का अध्ययन।
- देश के विभिन्न हिस्सों में प्रथाओं और रीति-रिवाजों में अंतर।

अतीत की पुस्तकों के विषय:
- धार्मिक मान्यताएँ और प्रथाएँ, राजाओं का जीवन, चिकित्सा, विज्ञान, महाकाव्य, कविताएँ और नाटक।

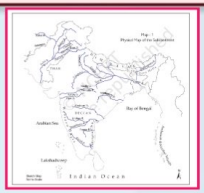

नाम और उत्पत्ति:
- उपमहाद्वीप को अक्सर इंडिया या भारत कहा जाता है।
- इंडिया सिंधु नदी से आता है, जबकि भारत का उपयोग उत्तर-पश्चिम में लोगों के एक समूह के लिए किया जाता था।

अतीत के बारे में पता लगाने की विधियाँ:
- पांडुलिपियों को पढ़ना, शिलालेखों का अध्ययन करना और पुरातात्विक अवशेषों की खोज करना।
- इतिहासकार और पुरातत्वविद् अतीत के पुनर्निर्माण के लिए इन स्रोतों का उपयोग करते हैं।

अतीत के अध्ययन में चुनौतियाँ:
- आम लोगों के पास रिकॉर्ड की कमी.
- विभिन्न क्षेत्रों में प्रथाओं और रीति-रिवाजों में अंतर।

डेटिंग प्रणाली:
- BC ईसा पूर्व की तारीखों को संदर्भित करता है, AD या CE ईसा मसीह के बाद की तारीखों को संदर्भित करता है।
- CE और BCE क्रमशः AD और BC के विकल्प हैं।
-बीपी का मतलब बिफोर प्रेजेंट से है।

आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक

शिकारी-संग्रहकर्ता और उनकी उत्तरजीविता तकनीकें:

शिकारी-संग्रहकर्ता जंगली जानवरों का शिकार करके, मछली पकड़कर और फल, जड़ें, मेवे, बीज, पत्ते, डंठल और अंडे इकट्ठा करके भोजन प्राप्त करते थे। वे विभिन्न प्रयोजनों के लिए पत्थर, लकड़ी और हड्डी के औजारों का उपयोग करते थे। वे भोजन और पानी की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहे और जल स्रोतों ने उनके निवास स्थान निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कृषि और बस्ती में संक्रमण:

लगभग 12,000 साल पहले, जलवायु परिवर्तन के कारण घास के मैदानों का विकास हुआ, जिससे घास खाने वाले जानवरों की संख्या में वृद्धि हुई। लोगों ने इन जानवरों का अनुसरण करना और उनके बारे में सीखना शुरू कर दिया, जिससे उन्हें चराने और पालने की संभावना बढ़ गई। मछली पकड़ना भी महत्वपूर्ण हो गया। पूरे उपमहाद्वीप में विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न फसलों की खेती के साथ शुरुआती किसानों और चरवाहों के साक्ष्य पाए गए हैं।

आग और दफ़नाने की प्रथाओं का उपयोग:

शिकारी-संग्रहकर्ता आग का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए करते थे, जैसे प्रकाश का स्रोत, मांस भूनना और जानवरों को डराना। गुफाओं में पाए गए राख के निशान आग से उनके परिचित होने का संकेत देते हैं। मेहरगढ़ में पाए गए दफ़नाने स्थल परवर्ती जीवन में विश्वास का संकेत देते हैं, दफ़नाने में कभी-कभी बकरियों जैसी वस्तुओं को भी शामिल किया जाता है, जिसका अर्थ संभवतः अगली दुनिया में भोजन के रूप में होता है।

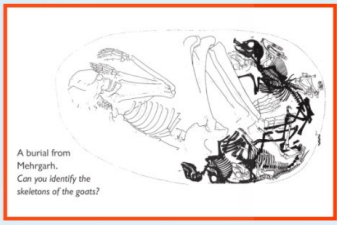

बस्ती और जीवनशैली:

पुरातात्विक स्थलों पर खाना पकाने के चूल्हों के साथ-साथ झोपड़ियों या घरों के निशान भी पाए गए हैं। लोग कपास जैसी सामग्री का उपयोग करके कपड़ा बुनाई जैसी गतिविधियों में लगे हुए हैं। अलग-अलग मौसमों के दौरान अलग-अलग गतिविधियाँ की गईं, कुछ क्षेत्रों में शिकार करना और इकट्ठा करना जारी रहा जबकि अन्य ने खेती और पशुपालन को अपनाया।

उपकरण और भंडारण विधियाँ:

पॉलिश किए गए नवपाषाणकालीन औजारों सहित पत्थर के औजारों का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता था। ओखली और मूसलों का उपयोग अनाज और अन्य पौधों की उपज को पीसने के लिए किया जाता था। भंडारण के तरीकों में मिट्टी के बड़े बर्तन बनाना, टोकरियाँ बुनना और गड्ढे खोदना शामिल था।

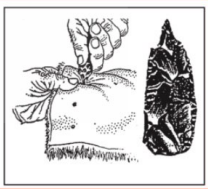

t.me/pragyeshIASMENTOR Pragyesh IAS pragyesh.org

पशुओं को पालतू बनाना और उनका पालन-पोषण करना:

कुत्ते, भेड़, बकरी, मवेशी और सूअर जैसे जानवरों को पालतू बनाया गया। वे मांस और दूध के रूप में भोजन उपलब्ध कराते थे और उन्हें एक मूल्यवान संसाधन माना जाता था।

जीवनशैली और आहार में बदलाव:

शिकार-संग्रह से खेती और पशुपालन की ओर संक्रमण के कारण जीवनशैली में बदलाव आया, जिसमें स्थायी जीवन अपनाना और घरों का निर्माण शामिल है। फसलों की खेती और जानवरों का पालन-पोषण महत्वपूर्ण होने के साथ ही आहार में भी बदलाव आया। संसाधन उत्पादन के लिए कपड़ा बुनाई और अन्य गतिविधियों का भी अभ्यास किया गया।

पुरातात्विक स्थल और साक्ष्य:

पुरातात्विक स्थल अतीत की मानवीय गतिविधियों के बहुमूल्य साक्ष्य प्रदान करते हैं। पूरे उपमहाद्वीप में शिकारी स्थलों, बस्तियों, औजारों और शुरुआती किसानों और चरवाहों के साक्ष्य पाए गए हैं। मेहरगढ़, एक उपजाऊ मैदान में स्थित, सबसे पहले ज्ञात गांवों में से एक है जहां खेती और पशुपालन के साक्ष्य पाए गए हैं।

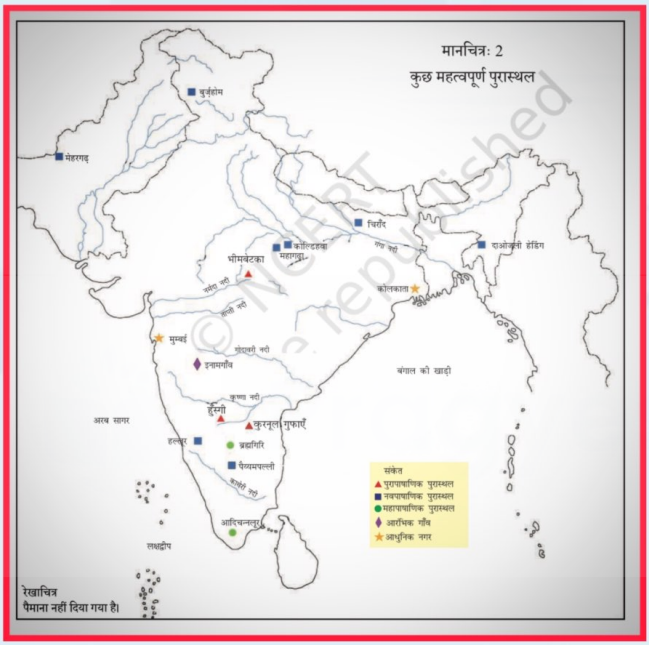

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

- मध्यपाषाण युग (12,000-10,000 साल पहले)
- बसने की प्रक्रिया का आरंभ (लगभग 12,000 साल पहले)
- नवपाषाण युग का आरंभ (10,000 साल पहले)
- मेहरगढ़ में बस्ती का आरंभ (लगभग 8000 साल पहले)

t.me/pragyeshIASMENTOR Pragyesh IAS pragyesh.org

अध्याय 3
आरंभिक नगर

जसपाल और हरप्रीत लोगों को एक पुरानी इमारत की प्रशंसा करते हुए देखते हैं और इसके महत्व पर सवाल उठाते हैं।
उपमहाद्वीप के सबसे पुराने शहरों में से एक, हड़प्पा की कहानी पेश की गई है।

हड़प्पा शहरों की वास्तुकला और लेआउट

A. शहरों का विभाजन

- शहरों को एक गढ़ (छोटा, ऊंचा हिस्सा) और एक निचले शहर (बड़ा, निचला हिस्सा) में विभाजित किया गया था।

बी गढ़ और निचला शहर

- गढ़ पर ग्रेट बाथ जैसी विशेष इमारतों का निर्माण किया गया था।
- प्रत्येक भाग को पक्की ईंटों की दीवारों से घेरा गया है, जो मजबूती और स्थायित्व प्रदान करती हैं।

मकानों, नालियों और सड़कों का निर्माण

ए मकान

- मकान एक या दो मंजिल ऊंचे होते थे, जिनमें आंगन के चारों ओर कमरे बने होते थे।
- कुछ घरों में अलग स्नान क्षेत्र और कुएं मौजूद थे।

बी. नालियां और सड़कें

- ढकी हुई नालियाँ सीधी रेखाओं में बिछाई गईं, जिनमें छोटी नालियाँ बड़ी नालियों में जाती थीं।
- नालियों की सफाई के लिए निरीक्षण छेद उपलब्ध कराए गए।
- घरों, नालियों और सड़कों की योजना संभवतः एक ही समय में बनाई और बनाई गई होगी।

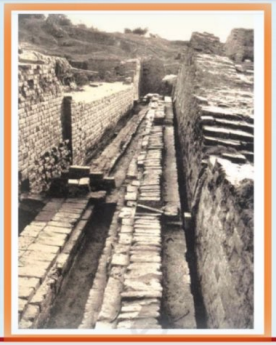

हड़प्पा शहरों में दैनिक जीवन

ए. शासक और शास्त्री

- शासक विशेष इमारतों के निर्माण का निरीक्षण करते थे, जबकि शास्त्री लेखन और मुहर बनाने में सहायता करते थे।

बी शिल्पकार

- शिल्पकारों ने विभिन्न वस्तुएं, जैसे मोती, बाट, ब्लेड और मिट्टी के बर्तन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सी. कच्चा माल और व्यापार

- तांबा, टिन, सोना और कीमती पत्थर जैसे कच्चे माल दूर-दराज के स्थानों से प्राप्त किए जाते थे।
- विभिन्न देशों के साथ व्यापार और संपर्क महत्वपूर्ण गतिविधियाँ थीं।

कच्चा माल और शिल्प

हड़प्पावासी पत्थर, शंख, तांबा, कांस्य, सोना और चांदी जैसे कच्चे माल का उपयोग करते थे।
तैयार की गई वस्तुओं में मोती, बाट, ब्लेड और मिट्टी के बर्तन शामिल थे।

हड़प्पा के शहरों में कई विशेष विशेषताएं थीं, और शहरों के नाम के साथ उनमें से कुछ यहां दी गई हैं:

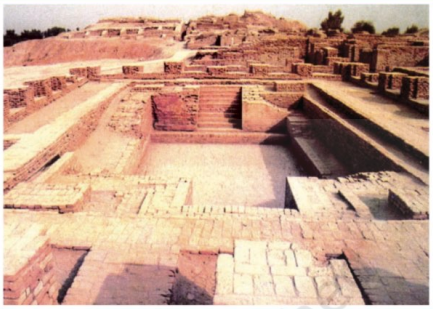

1. **मोहनजोदड़ो:**
   - **महान स्नानघर:** ईंटों से बना एक विशेष टैंक, प्लास्टर से लेपित, और प्राकृतिक टार की परत से जल-रोधी बनाया गया। इसमें दो तरफ से नीचे जाने के लिए सीढ़ियाँ थीं और सभी तरफ कमरे थे।
   -विस्तृत भंडारगृह।

2. **कालीबंगन:**
   - **अग्नि वेदिकाएँ:** यज्ञ करने के लिए उपयोग की जाती हैं।

3. **लोथल:**
   - **अग्नि वेदिकाएँ:** यज्ञ करने के लिए उपयोग की जाती हैं।
   - **भण्डारगृह:** एक बड़ा भण्डारगृह जहाँ अनेक मुहरें और मोहरें पाई गईं।

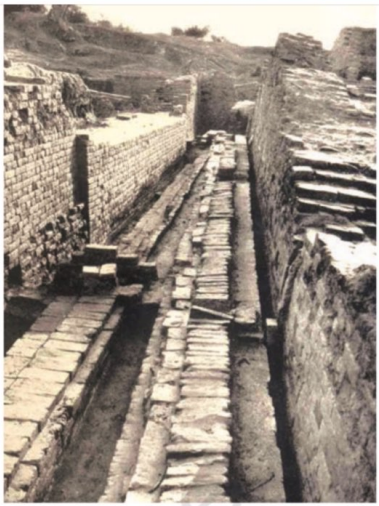

4. **हड़प्पा:**
   - **गढ़ और निचला शहर:** शहर को दो भागों में विभाजित किया गया था, पश्चिम में एक छोटा और ऊंचा गढ़ और पूर्व में एक बड़ा और निचला शहर था।
   - **पक्की ईंटों की दीवारें:** शहर के हर हिस्से को घेरना।
   - **विशेष इमारतें:** हालांकि दस्तावेज़ में निर्दिष्ट नहीं है, हड़प्पा अपनी प्रभावशाली वास्तुकला और शहरी नियोजन के लिए जाना जाता है।

5. **धोलावीरा:**
   - विशाल पत्थर की दीवारें: शहर के प्रत्येक भाग को घेरे हुए।
   - बड़ा खुला क्षेत्र: सार्वजनिक समारोहों के लिए उपयोग किया जाता है।
   - अद्वितीय खोज: सफेद पत्थर से उकेरे गए हड़प्पा लिपि के बड़े अक्षर।

पतन और परिवर्तन: हड़प्पा के शहरों का अंततः पतन हो गया, जिनमें से कई को छोड़ दिया गया। इस गिरावट के कारण अभी भी अनिश्चित हैं, लेकिन सिद्धांत सूखी नदियों, वनों की कटाई, बाढ़ और शासकों द्वारा नियंत्रण खोने जैसे कारकों का सुझाव देते हैं। लगभग 1400 वर्ष बाद विभिन्न क्षेत्रों में नई बस्तियाँ उभरीं।

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

- मेहरगढ़ में कपास की खेती (लगभग 7000 साल पहले)
- नगरों का आरंभ (लगभग 4700 साल पहले)
- हड़प्पा के नगरों के अंत की शुरुआत (लगभग 3900 साल पहले)
- अन्य नगरों का विकास (लगभग 2500 साल पहले)

अध्याय 4
क्या बताती हैं हमें किताबें और कब्रें

वेद और ऋग्वेद:
- वेद प्राचीन ग्रंथों का एक संग्रह है जो देवी-देवताओं की स्तुति करने वाले भजनों से बना है।
- ऋग्वेद सबसे पुराना वेद है, जिसकी रचना लगभग 3500 वर्ष पूर्व हुई थी।
- ऋग्वेद में विभिन्न देवी-देवताओं की स्तुति करते हुए एक हजार से अधिक भजन शामिल हैं, जिन्हें सूक्त या "अच्छी तरह से कहा गया" कहा जाता है।
- भजन ऋषियों (ऋषियों) द्वारा रचित थे और पुजारियों और छात्रों द्वारा सिखाए और याद किए गए थे।

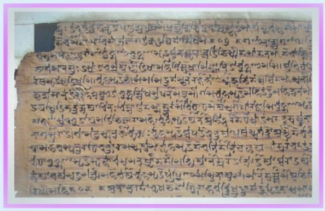

भाषा और पांडुलिपियाँ:
- ऋग्वेद पुरानी या वैदिक संस्कृत में लिखा गया है, जो आज स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली संस्कृत से अलग है।
- ऋग्वेद की पांडुलिपियाँ बर्च की छाल पर लिखी गईं और बाद में मुद्रित पाठ और अनुवाद तैयार करने के लिए उपयोग की गईं।
- ऋग्वेद की पांडुलिपियाँ कश्मीर जैसे स्थानों में पाई गई हैं और पुस्तकालयों में संरक्षित हैं।

ऋग्वेद में समाज और लोग:
- ऋग्वेद में लोगों के विभिन्न समूहों का वर्णन किया गया है, जिनमें पुजारी (ब्राह्मण) शामिल हैं जो अनुष्ठान करते थे और राजा जो नेता थे।
- लोगों का वर्णन उनके द्वारा किए गए काम और उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं के आधार पर किया गया।
- ऋग्वेद में आर्यों और दासों या दस्युओं के बीच भेद का उल्लेख है, जो संभावित रूप से विभिन्न सामाजिक समूहों या विरोधियों का संकेत देता है।

महापाषाणिक अंत्येष्टि:
- मेगालिथ, बड़े पत्थर के पत्थर, का उपयोग दफन स्थलों को चिह्नित करने के लिए किया जाता था।
- महापाषाण अंत्येष्टि दक्कन, दक्षिण भारत, उत्तर-पूर्व और कश्मीर में प्रचलित थी।
- महापाषाणकालीन कब्रगाहों में कंकालों के साथ पाई गई वस्तुएं दफनाए गए व्यक्तियों के बीच सामाजिक मतभेदों का सुझाव देती हैं।

सामाजिक मतभेद और दफ़नाने की प्रथाएँ:
- कब्रगाहों में कंकालों के साथ मिली वस्तुएं सामाजिक मतभेदों का प्रमाण देती हैं।
- दफ़न स्थल कुछ खास परिवारों या उच्च स्तर के व्यक्तियों के लिए रहे होंगे।
- कुछ कब्रगाहों में अधिक वस्तुएं होती हैं, जैसे सोने के मोती और तांबे की चूड़ियाँ, जो उच्च स्थिति वाले व्यक्तियों का संकेत देती हैं।

कंकाल अध्ययन और लिंग निर्धारण:
- कंकाल के लिंग का निर्धारण करने के लिए कंकाल अध्ययन का उपयोग किया जाता है।
- हड्डियों की संरचना में अंतर कंकाल के लिंग की पहचान करने में मदद कर सकता है, हालांकि यह चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- कंकालों के साथ पाई जाने वाली वस्तुएं, जैसे आभूषण, का उपयोग कभी-कभी लिंग निर्धारित करने के लिए किया जाता है, लेकिन इस विधि की सीमाएं हैं।

इनामगांव बस्ती:
- इनामगांव 3600 से 2700 साल पहले बसी एक बस्ती थी।
- साक्ष्य बताते हैं कि इनामगांव के लोग कृषि और शिकार में लगे हुए थे।
- इनामगांव में दफ़नाने में मृतकों के साथ भोजन और पानी के बर्तन रखना शामिल था।

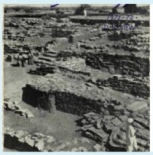

ऐतिहासिक और भाषाई संदर्भ:
- ऋग्वेद इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार से संबंधित है, जिसमें संस्कृत, असमिया, हिंदी, फ़ारसी और विभिन्न यूरोपीय भाषाएँ शामिल हैं।
- उपमहाद्वीप में विभिन्न भाषाएँ अलग-अलग भाषा परिवारों से संबंधित हैं, जैसे तिब्बती-बर्मन, द्रविड़ियन और ऑस्ट्रो-एशियाटिक।

गतिविधियाँ और कविताएँ:
- छात्रों के लिए गतिविधियों में स्कूल पुस्तकालय में धर्म पर किताबें ढूंढना और उनके नाम सूचीबद्ध करना शामिल है।
- छात्रों को याद की गई एक छोटी कविता या गीत लिखने और यह बताने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है कि उन्होंने इसे कैसे सीखा।

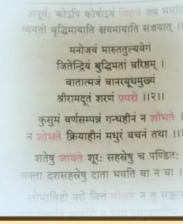

सामाजिक पदानुक्रम और नेतृत्व:
- ऋग्वेद में नेताओं (राजाओं) की भूमिका का उल्लेख है जो अक्सर बहादुर और कुशल योद्धा होते थे।
- पुत्र स्वतः ही राजा के रूप में पिता के उत्तराधिकारी नहीं बनते थे, और नेताओं को सभाओं के माध्यम से चुना जाता था जहाँ लोग युद्ध और शांति के मामलों पर चर्चा करते थे।

नदियों और संवादों का महत्व:
- ऋग्वेद में ऋषियों और नदियों के बीच संवाद शामिल हैं, जिनकी देवी के रूप में पूजा की जाती थी।
- ऋग्वेद में नदियों को शक्तिशाली और पानी से भरपूर बताया गया है, जो उनके महत्व का प्रतीक है।

मेगालिथ का महत्व:
- मेगालिथ मूक प्रहरी के रूप में कार्य करते थे और दफन स्थलों को चिह्नित करने के लिए सावधानीपूर्वक व्यवस्थित किए गए थे।
- सतह पर रखे गए पत्थर के घेरे या बोल्डर दफन स्थलों को खोजने के लिए साइनपोस्ट के रूप में काम करते थे।

राजा और दास के बीच अंतर:
- राजा का जीवन दास या दासी से भिन्न होता था।
- राजा नेता थे, जबकि दासों या दासियों को अक्सर विरोधियों या युद्ध में पकड़े गए गुलामों के रूप में वर्णित किया जाता था।

अध्याय 5
राज्य, राजा और एक प्राचीन गणराज्य

1. **अनुष्ठान और शासकः**
- अश्वमेध घोड़े की बलि जैसे अनुष्ठानों ने राजाओं के रूप में मान्यता निर्धारित की।
- बलिदान में घोड़े को खुला छोड़ना और उसकी रक्षा करना शामिल था। यदि अन्य राजा घोड़े को रोकते तो उन्हें लड़ना पड़ता था, लेकिन यदि वे उसे आगे बढ़ने देते थे, तो वे राजा की शक्ति को स्वीकार कर लेते थे।
- यज्ञ का आयोजन करने वाले राजा को उपहार मिलते थे और उसे शक्तिशाली माना जाता था।

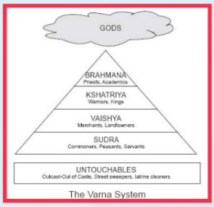

The Varna System

2. **सामाजिक श्रेणियाँ या वर्णः**
- प्राचीन भारतीय समाज चार वर्णों में विभाजित था: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
- ब्राह्मणों ने वेदों का अध्ययन और अध्यापन किया, क्षत्रियों ने युद्ध लड़े, वैश्य खेती और व्यापार में लगे रहे, और शूद्र अन्य तीन समूहों की सेवा करते थे।

3. **जनपद और महाजनपदः**
- जनपद वे बस्तियाँ थीं जहाँ लोग रहते थे और विभिन्न गतिविधियों में लगे रहते थे।
- कुछ जनपद अधिक महत्वपूर्ण हो गए और गढ़वाली राजधानी वाले शहरों के साथ महाजनपद के रूप में जाने गए।
- महाजनपदों में सुरक्षा के लिए लकड़ी, ईंट या पत्थर की विशाल दीवारें होती थीं।

NORTHERN BLACK POLISHED WARE FROM VARIOUS SITES

4. **कृषि में परिवर्तनः**
- लोहे के फाल के प्रयोग और धान की रोपाई से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई।
- लोहे के फाल से भारी मिट्टी को मोड़ने में सुधार हुआ और धान की रोपाई से अधिक पौधे जीवित बचे।

5. **मगध और वज्जिः**
- बिम्बिसार, अजातसत्तु और महापद्म नंद जैसे शक्तिशाली शासकों के साथ मगध सबसे महत्वपूर्ण महाजनपद बन गया।
- वज्जि के पास सरकार का एक अनोखा रूप था जिसे गण या संघ के नाम से जाना जाता था, जिसमें कई शासक चर्चा और बहस के माध्यम से निर्णय लेते थे।

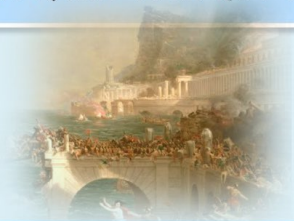

6. **गणों या संघों का पतनः**
- गुप्त शासकों की विजय और सिकंदर महान के आक्रमण के कारण गण या संघ का पतन हुआ।
- गुप्त शासकों ने अंतिम गणों या संघों पर विजय प्राप्त की।

7. **किलेबंदी और कराधान:**
- महाजनपदों ने सुरक्षा के लिए किले बनवाए और नियमित कर वसूलना शुरू कर दिया।
- शासकों की गतिविधियों का समर्थन करने के लिए कर एकत्र किए जाते थे।

8. **वर्तमान समय की प्रासंगिकता:**
- जनपदों के अस्तित्व और मतदान के अधिकार पर उनके प्रभाव की खोज करना।
- प्राचीन राजनीतिक संरचनाओं की आधुनिक शासन प्रणालियों से तुलना करना।

वर्ण

उस समय चार सामाजिक वर्ग थे : ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र। ब्राह्मणों का काम वेदों का अध्ययन-अध्यापन और यज्ञ करना था जिनके लिए उन्हें उपहार मिलता था। क्षत्रियों का काम युद्ध करना और लोगों की रक्षा करना था। वैश्यों के काम खेती, पशुपालन तथा व्यापार थे। शूद्रों का काम अन्य तीनों वर्गों की सेवा करना था।

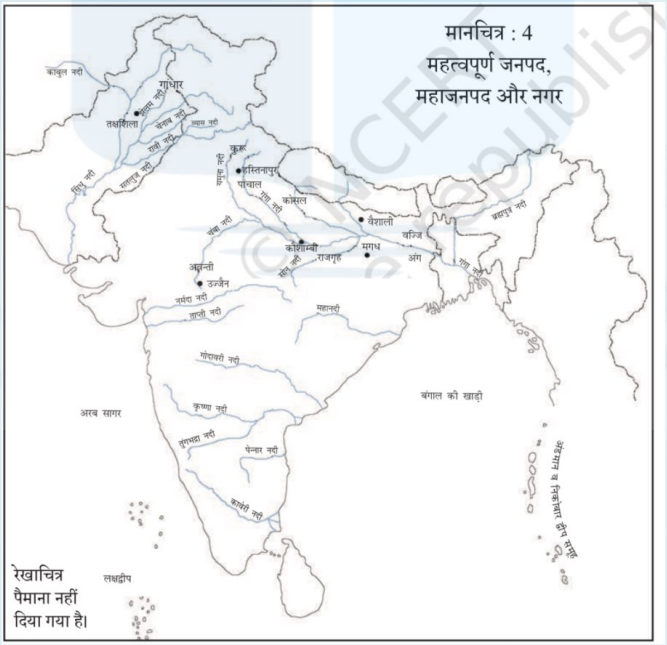

मानचित्र : 4
महत्वपूर्ण जनपद,
महाजनपद और नगर

t.me/pragyeshIASMENTOR Pragyesh IAS pragyesh.org

बुद्ध की कहानी:

• **जन्म और आत्मज्ञान की खोज:** शाक्य समूह में जन्मे सिद्धार्थ गौतम ने ज्ञान की खोज की और बिहार के बोधगया में एक पीपल के पेड़ के नीचे ज्ञान प्राप्त किया।

• **बुद्ध बनना:** ज्ञान प्राप्ति के बाद, वह बुद्ध बन गए, सारनाथ में अपनी शिक्षा शुरू की और कुशीनारा में अपने निधन तक अपना जीवन यात्रा और शिक्षण में बिताया।

बुद्ध की शिक्षाएँ:

• **जीवन की प्रकृति:** उन्होंने सिखाया कि जीवन इच्छाओं के कारण होने वाली पीड़ा से भरा है, उन्होंने इस पीड़ा को कम करने के लिए संयम की वकालत की।

• **दया और करुणा:** अपनी शिक्षाओं के लिए प्राकृत की सुलभ भाषा का उपयोग करते हुए, सभी प्राणियों के लिए दया और सम्मान पर जोर दिया।

बौद्ध धर्म का प्रसार:

• **विस्तार:** बौद्ध धर्म पूरे उपमहाद्वीप और उससे आगे तक फैल गया, जिससे महायान बौद्ध धर्म का विकास हुआ, जिसमें बोधिसत्व शामिल थे।

• **क्षेत्रीय प्राथमिकताएँ:** विभिन्न क्षेत्रों ने थेरवाद बौद्ध धर्म जैसी विविधताओं का समर्थन किया या बोधिसत्वों की पूजा को अपनाया, जो मध्य एशिया, चीन, कोरिया, जापान और दक्षिण पूर्व एशिया तक फैला हुआ था।

उपनिषद अवलोकन:

• **उद्भव और प्रकृति:** उत्तर वैदिक काल के दौरान उत्पन्न, उपनिषद दार्शनिक ग्रंथ थे जिनमें मृत्यु के बाद जीवन और बलि अनुष्ठानों के पीछे के उद्देश्य पर चर्चा करने वाले संवाद थे।

उपनिषद विचारक:

• **मुख्य रूप से पुरुष पात्र:** मुख्य रूप से पुरुषों द्वारा गठित, विशेष रूप से ब्राह्मणों और राजाओं द्वारा, कभी-कभी गार्गी, अपाला, घोषा और मैत्रेयी जैसी प्रसिद्ध महिला विचारकों का उल्लेख होता है। इन महिलाओं ने असाधारण ज्ञान का प्रदर्शन करते हुए बहसों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

• **विरासत और विकास:** इन विचारकों द्वारा विकसित विचार, विशेष रूप से आत्मा और ब्राह्मण की अवधारणाओं को बाद में शंकराचार्य द्वारा विस्तारित किया गया, जिससे बौद्धिक प्रवचन में महत्वपूर्ण योगदान मिला।

महत्व:

• **दार्शनिक विचारों को आकार देना:** बाद के वैदिक ग्रंथों का अभिन्न अंग, उपनिषदों ने दार्शनिक विचारों को गहराई से प्रभावित किया।

• **अस्तित्व की खोज:** अस्तित्व की प्रकृति, आत्मा (आत्मान), और ब्रह्मांड (ब्राह्मण) से संबंधित मौलिक पूछताछ में तल्लीन।

• **स्थायी प्रभाव:** भारतीय दार्शनिक परंपराओं पर एक स्थायी छाप छोड़ी, निरंतर चिंतन और आध्यात्मिक अवधारणाओं की खोज को बढ़ावा दिया।

महायान बौद्ध धर्म का प्रभाव:

• **प्रतिनिधित्व में बदलाव:** महायान बौद्ध धर्म के उद्भव ने बुद्ध की मूर्तियों और बोधिसत्वों में विश्वास को जन्म दिया।

• **पूजा का विकास:** बुद्ध के चित्रण और सम्मान में महत्वपूर्ण परिवर्तन, धार्मिक परिदृश्य में बदलाव का प्रतीक है।

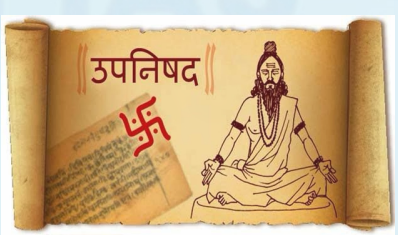

जैन धर्म की उत्पत्ति और शिक्षाएँ:

• **संस्थापक और सिद्धांत:** लगभग 2500 साल पहले 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर द्वारा स्थापित। अहिंसा (अहिंसा), सच्चाई, ईमानदारी और ब्रह्मचर्य का कड़ाई से पालन करने पर जोर दिया गया।

• **महावीर का जीवन:** एक क्षत्रिय राजकुमार, महावीर ने तीस साल की उम्र में घर छोड़ने के बाद बारह साल की तपस्या और एकान्त जीवन के बाद ज्ञान प्राप्त किया।

जैन धर्म का प्रसार:

• **समर्थन और विस्तार:** मुख्य रूप से व्यापारियों द्वारा समर्थित, जैन धर्म सदियों से उत्तर भारत, गुजरात, तमिलनाडु और कर्नाटक में विस्तारित हुआ।

• **मौखिक प्रसारण से लेखन तक:** लगभग 1500 साल पहले गुजरात के वल्लभी में कलमबद्ध होने से पहले सदियों तक शिक्षाएँ मौखिक रूप से प्रसारित होती रहीं।

जैन संघ और जीवन शैली:

• **सच्चे ज्ञान के लिए संघ**: जैन संघ का गठन वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के लिए किया गया था।

• **सादा जीवन:** सदस्य विनम्र जीवन जीते थे, ध्यान में लगे रहते थे और शहरों और गांवों में निश्चित समय पर जीविका के लिए भीख मांगते थे। संघ के नियम दोनों लिंगों के लिए विनय पिटक में प्रलेखित हैं।

प्रभाव और प्रसार:

• **सुलभ शिक्षाएँ**: सुलभता के लिए प्राकृत में दी गईं। अनुयायियों ने संपत्ति, यहाँ तक कि कपड़े भी त्याग दिये।

• **धार्मिक परंपरा**: जैन धर्म का प्रभाव पूरे भारत में व्यापक रूप से फैला, जिसने क्षेत्र के दार्शनिक और धार्मिक परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया।

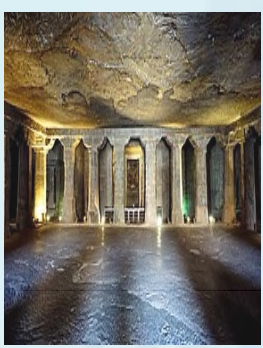

बौद्ध संघ:

• **उद्देश्य:** सादगी और अनुशासन पर जोर देते हुए बुद्ध की शिक्षाओं का अनुसरण करने वाले विभिन्न पृष्ठभूमियों के भिक्षुओं और ननों को शामिल किया गया।

• सदस्यता: विनय पिटक में उल्लिखित दिशानिर्देशों के साथ, विभिन्न व्यक्तियों ने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया।

जैन संघ:

• **बौद्ध संघ से समानता:** आध्यात्मिक विकास चाहने वालों को सहायता प्रदान की गई, सादगी और अहिंसा (अहिंसा), ईमानदारी और ब्रह्मचर्य के पालन पर जोर दिया गया।

• समर्थन और प्रसार: मुख्य रूप से व्यापारियों द्वारा समर्थित, जैन धर्म का विस्तार उत्तर भारत, गुजरात, तमिलनाडु और कर्नाटक जैसे क्षेत्रों में हुआ।

विहारों का अवलोकन:

• **उद्देश्य और स्थापना:** अधिक स्थायी आवास चाहने वाले भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए स्थायी आश्रय, शुरू में लकड़ी और बाद में ईंटों से बने, कुछ पश्चिमी भारत में गुफाओं के भीतर स्थित थे।

• **समर्थन और निर्माण:** धनी व्यापारियों, ज़मींदारों, या राजाओं द्वारा दान की गई भूमि; स्थानीय समुदायों ने भिक्षुओं और ननों की सहायता के लिए भोजन, कपड़े और दवाइयों का योगदान दिया।

• **सेवाओं का आदान-प्रदान:** भिक्षुओं और ननों ने बदले में शिक्षाएँ प्रदान कीं, जिससे पूरे उपमहाद्वीप और उसके बाहर बौद्ध धर्म के प्रसार में सहायता मिली।

अध्याय 7
राज्य से साम्राज्य

The lion capital

राज्य से साम्राज्य

👑 मौर्य साम्राज्य की स्थापना 2300 वर्ष पहले चंद्रगुप्त मौर्य ने, चाणक्य या कौटिल्य के सहयोग से की थी।
🏰 साम्राज्य पर मौर्य वंश का शासन था, जिसमें चंद्रगुप्त, बिन्दुसार और अशोक शामिल थे।
🌇 साम्राज्य में विभिन्न शहर शामिल थे, जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी, और तक्षशिला और उज्जैन जैसे प्रांत थे।
🗺️ साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में शासन के अलग-अलग रूप थे, जिसमें सम्राट सीधे पाटलिपुत्र के आसपास के क्षेत्र को नियंत्रित करते थे और अन्य क्षेत्रों पर प्रांतीय राजधानियों से शासन करते थे।
🌿 सबसे प्रसिद्ध मौर्य शासक अशोक ने एक नैतिक और आचार संहिता 'धम्म' को बढ़ावा दिया और कलिंग युद्ध के बाद हिंसा का त्याग कर दिया।
🌍 'धम्म' फैलाने के अशोक के प्रयासों में अधिकारियों की नियुक्ति करना, दूत भेजना और साम्राज्य भर में और सीरिया, मिस्र और ग्रीस जैसी भूमि सहित उसके बाहर अपने सिद्धांतों को अंकित करना शामिल था।
💥मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण कई नए साम्राज्यों का उदय हुआ, जिनमें इंडो-ग्रीक, शक, कुषाण, शुंग, कण्व और गुप्त साम्राज्य शामिल थे।

शासन और प्रशासन

🏛️ मौर्य साम्राज्य में विभिन्न प्रशासनिक तंत्रों के साथ शासन की एक केंद्रीकृत प्रणाली थी।
👑 राजधानी पाटलिपुत्र के आसपास का क्षेत्र सीधे सम्राट द्वारा नियंत्रित किया जाता था, जिसमें कर संग्रह और आदेशों को लागू करने के लिए नियुक्त अधिकारी जिम्मेदार होते थे।
🌍 तक्षशिला और उज्जैन जैसे प्रांतों पर स्थानीय रीति-रिवाजों का पालन करते हुए प्रांतीय राजधानियों से शासन किया जाता था और अक्सर शाही राजकुमारों द्वारा शासन किया जाता था।
🚂 साम्राज्य का उद्देश्य महत्वपूर्ण परिवहन मार्गों को नियंत्रित करना था और कर और श्रद्धांजलि के रूप में कंबल, सोना और कीमती पत्थरों जैसे संसाधनों को एकत्र करना था।
🏥अशोक के कल्याणकारी उपायों में सड़कों, कुओं, विश्राम गृहों का निर्माण और मनुष्यों और जानवरों दोनों के लिए चिकित्सा देखभाल प्रदान करना शामिल था।

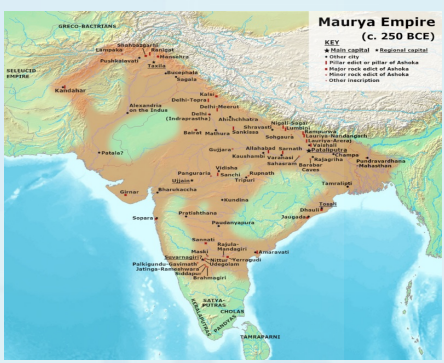

मेगस्थनीज

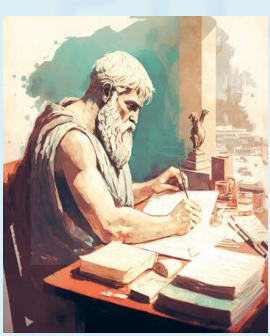

📚 मेगस्थनीज एक प्राचीन यूनानी इतिहासकार और राजनयिक थे जिन्होंने चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में राजदूत के रूप में कार्य किया था।
🌍 उन्होंने "इंडिका" लिखी, जो मौर्य काल के दौरान भारत का एक विस्तृत विवरण है, जो इसकी राजनीति, समाज और संस्कृति के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।
🏛️ मेगस्थनीज के लेखन से मौर्य साम्राज्य की शासन व्यवस्था एवं प्रशासन पर प्रकाश पड़ता है।
🤝 वह सेल्यूसिड साम्राज्य के शासक सेल्यूकस प्रथम निकेटर के चंद्रगुप्त मौर्य के राजदूत थे।
📖 भारत के बारे में उनकी टिप्पणियों और विवरणों ने इस ऐतिहासिक काल की हमारी समझ में बहुत योगदान दिया है।

t.me/pragyeshIASMENTOR Pragyesh IAS pragyesh.org

अशोक अद्वितीय शासक के रूप में

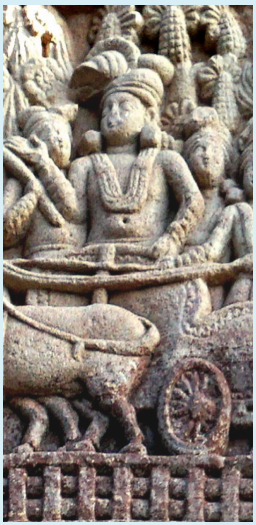

📜 अशोक के शिलालेख: शिलालेखों के माध्यम से अपनी जनता से संवाद करने वाला अशोक पहला शासक था। उनके अधिकांश शिलालेख प्राकृत में थे और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे, जो शासन और संचार के प्रति उनके अभिनव दृष्टिकोण को प्रदर्शित करते थे। (🖋️)

🔀 हिंसा का त्याग: कलिंग युद्ध की हिंसा और रक्तपात देखने के बाद, अशोक ने आगे की विजय और हिंसा को त्याग दिया, जिससे वह इतिहास में एकमात्र राजा बन गया जिसने युद्ध जीतने के बाद विजय छोड़ दी। (🕊️)

🌿 'धम्म' को बढ़ावा देना: अशोक के शासन की विशेषता एक नैतिक और नैतिक संहिता 'धम्म' को बढ़ावा देना था। उनके 'धम्म' में किसी देवता की पूजा या बलिदान करना शामिल नहीं था। इसके बजाय, उन्होंने बुद्ध की शिक्षाओं से प्रेरित होकर, अपनी प्रजा को निर्देश देना अपना कर्तव्य महसूस किया। (🙏)

🚶 'धम्म' का प्रसार: अशोक ने धम्म महामत्त के नाम से जाने जाने वाले अधिकारियों को नियुक्त किया, जो लोगों को 'धम्म' के बारे में सिखाने के लिए यात्रा करते थे। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अपने संदेशों को चट्टानों और स्तंभों पर अंकित किया, और अपने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे उनके संदेश को उन लोगों को पढ़कर सुनाएँ जो इसे स्वयं नहीं पढ़ सकते। (📚)

🏥 कल्याणकारी उपाय और बुनियादी ढाँचा: अशोक के शासन में व्यापक कल्याणकारी उपाय और बुनियादी ढाँचा विकास शामिल था। उन्होंने सड़कें बनवाईं, कुएँ खुदवाए और विश्राम गृह बनवाए। इसके अलावा, उन्होंने शासन के प्रति दयालु और प्रगतिशील दृष्टिकोण का प्रदर्शन करते हुए, मनुष्यों और जानवरों दोनों के लिए चिकित्सा उपचार की व्यवस्था की। (🏞️)

कलिंग युद्ध

⚔️ कलिंग युद्ध: लगभग 2300 वर्ष पूर्व अशोक द्वारा कलिंग (तटीय उड़ीसा) क्षेत्र को लक्ष्य कर लड़ा गया महत्वपूर्ण संघर्ष।
जीवन की विनाशकारी क्षति: युद्ध के परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में लोग हताहत हुए, कई लोग मारे गए या पकड़े गए।

🌍 अशोक पर परिवर्तनकारी प्रभाव: हिंसा और रक्तपात को देखने से उन पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिससे युद्ध और विजय के प्रति उनके दृष्टिकोण में बदलाव आया।

🕊️ आगे के सैन्य अभियानों का त्याग: कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने अहिंसा का मार्ग चुनते हुए आगे की विजय और हिंसा को छोड़ने का निर्णय लिया।

🏛️ नैतिक शासन: युद्ध ने अशोक के शासनकाल में एक महत्वपूर्ण मोड़ ला दिया, जिससे उन्हें नैतिक शासन और अहिंसक सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित करना पड़ा।

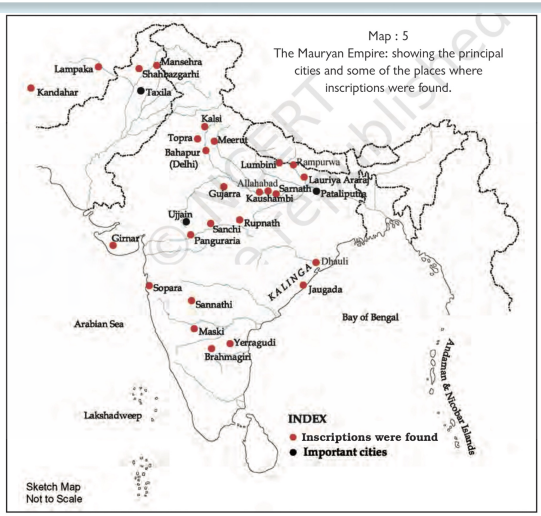

t.me/pragyeshIASMENTOR Pragyesh IAS pragyesh.org

अध्याय 8
गाँव, शहर और व्यापार

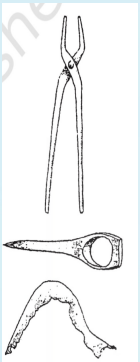

कृषि उत्पादन में वृद्धि

- 🪓 प्राचीन भारत में जंगलों को साफ़ करने और कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कुल्हाड़ी और हल जैसे लोहे के औजारों का उपयोग किया जाता था।
- 💧 फसल वृद्धि को समर्थन देने के लिए नहरों, कुओं, टैंकों और कृत्रिम झीलों जैसी सिंचाई प्रणालियाँ लागू की गईं।
- 🌱 नए उपकरणों और प्रत्यारोपण तकनीकों के परिचय से कृषि उत्पादकता में सुधार करने में मदद मिली।
- 👷 लोगों ने सिंचाई कार्यों के निर्माण के लिए श्रम प्रदान किया, कृषि बुनियादी ढांचे के विकास में योगदान दिया।
- 🌾 सिंचाई प्रणालियों ने अधिक विश्वसनीय फसल उत्पादन प्रदान किया, जिससे किसानों के लिए निश्चितता सुनिश्चित हुई।
- 💰 किसानों ने कर दायित्वों को पूरा करने और अधिक राजस्व उत्पन्न करने के लिए उत्पादन बढ़ाया।
- 👑 राजाओं ने धन उपलब्ध कराकर और सिंचाई परियोजनाओं की योजना बनाकर कृषि विकास का समर्थन किया।

👥**तमिल क्षेत्र में सामाजिक संरचना:**

वेल्लालर: तमिल क्षेत्र में बड़े जमींदार।

उझावर: हल चलाने वाले, कृषि गतिविधियों में शामिल।

कदैसियार और आदिमाई: दासों सहित भूमिहीन मजदूर।

🏠 **उत्तरी भारत में सामाजिक संरचना:**

ग्राम भोजक: वंशानुगत ग्राम प्रधान और प्राचीन भारत के उत्तरी भाग में सबसे बड़ा जमींदार।

गृहपति: स्वतंत्र किसान, ज्यादातर छोटे ज़मींदार।

दासा कर्मकारा: भूमिहीन मजदूर जो दूसरों के खेतों पर काम करते थे।

🔨 **गांवों में शिल्पकार:**

अधिकांश गांवों में लोहार, कुम्हार, बढ़ई और बुनकर मौजूद थे, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान दे रहे थे।

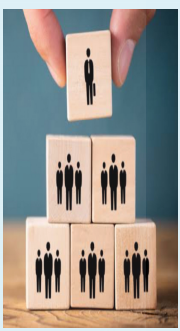

शहरों की बहुकार्यात्मक भूमिका

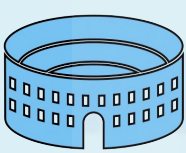

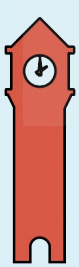

पहलू	विवरण
शहरों की बहुकार्यात्मक भूमिका	व्यापार, प्रशासन, धर्म और शिल्प उत्पादन के केंद्र।
उदाहरण: मथुरा का महत्व	धार्मिक केंद्र, व्यापार केंद्र और शिल्प उत्पादन स्थल के रूप में 2500 वर्षों से अधिक महत्व।
व्यापार महत्व	मथुरा जैसे शहर प्रमुख व्यापार मार्ग चौराहों पर अपनी स्थिति के कारण व्यापार के लिए महत्वपूर्ण हैं।
धार्मिक महत्व	मथुरा में बौद्ध मठ, जैन मंदिर थे और यह कृष्ण पूजा का केंद्र था।
शिल्प उत्पादन केंद्र	मथुरा जैसे शहर उत्कृष्ट मूर्तियां बनाने में अपनी विशेषज्ञता के लिए जाने जाते हैं।
प्रशासनिक एवं राजनीतिक कार्य	शहर शासन, कर संग्रह और न्यायिक कार्यवाही के केंद्र के रूप में कार्य करते थे।
रक्षा और सुरक्षा	किलेबंद शहर बाहरी खतरों और आक्रमणों से सुरक्षा के लिए रक्षात्मक गढ़ों के रूप में काम करते थे।

🎨**भारत में प्राचीन शिल्प:**

🖌️**मिट्टी के बर्तन:** उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में प्रचलित उत्तरी ब्लैक पॉलिश्ड वेयर (NBPW) जैसे बढ़िया मिट्टी के बर्तनों का उत्पादन। 🏺

👕**बुनाई**: वाराणसी और मदुरै जैसे प्रसिद्ध केंद्र कपड़ा निर्माण में विशेषज्ञता रखते हैं। पुरुषों और महिलाओं दोनों ने उत्पादन में योगदान दिया।

🛠️**धातुकर्म**: कुशल कारीगर धातुकर्म का अभ्यास करते हैं, जटिल धातु की वस्तुएं और आभूषण बनाते हैं। 💍

🔮**अन्य कारीगर कौशल:** शिल्पकार विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करते हुए शिल्प कौशल के विभिन्न रूपों में शामिल थे। 🏺

🌍**शिल्प का महत्व:** शिल्प दैनिक जीवन, व्यापार और धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाओं के लिए आवश्यक थे। उन्होंने अर्थव्यवस्था और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 🏛️

🔧**विशेष तकनीकें:** शिल्पकारों ने उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद बनाने के लिए विशेष उपकरण और तकनीकों का उपयोग किया।

💼**व्यापार और विनिमय:** तैयार की गई वस्तुओं का समुदायों के भीतर और बाहर व्यापार किया जाता था, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आर्थिक विकास में योगदान होता था। 🌍

🚢**प्राचीन भारत में व्यापारी:**

- **वस्तुओं की विस्तृत श्रृंखला:** व्यापारियों ने मिट्टी के बर्तन, सोना, मसाले (विशेष रूप से काली मिर्च), कीमती पत्थर, रेशम और अन्य मूल्यवान वस्तुओं जैसे सामानों के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान की। 🏺
- **समुद्री व्यापार:** समुद्र के पार माल परिवहन के लिए जहाजों का उपयोग किया जाता है, तटों, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के साथ समुद्री मार्गों की खोज की जाती है। ⛵
- **भूमि व्यापार:** विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ने वाले भूमि मार्गों पर माल परिवहन के लिए कारवां का उपयोग किया जाता है। 🐪
- **रोम के साथ व्यापार:** रोम के साथ व्यापार के साक्ष्य, जैसा कि दक्षिण भारत में रोमन सोने के सिक्कों की उपस्थिति में देखा गया है। 🇮🇹
- **मानसूनी हवाओं का उपयोग:** व्यापारियों ने कुशल समुद्री यात्रा और अन्वेषण के लिए मानसूनी हवाओं का लाभ उठाया। ⛵
- **विभिन्न क्षेत्रों के साथ आदान-प्रदान:** विभिन्न क्षेत्रों के साथ वस्तुओं के आदान-प्रदान में संलग्न, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना। 🌍
- **विविध व्यापार गतिविधियाँ:** विभिन्न उत्पादों के परिवहन, बिक्री और अन्वेषण में शामिल, समृद्ध व्यापार नेटवर्क में योगदान। 📦

💰**प्राचीन भारत में छिद्रित सिक्के:**

- **मुद्रा प्रपत्र:** धातु की चादरों या चपटी धातु की गोलियों से बने आयताकार, चौकोर या गोल सिक्के। डाई या पंच का उपयोग करके प्रतीकों के साथ मुहर लगाई गई।
- **व्यापक प्रसार:** पूरे उपमहाद्वीप में पाया जाता है और प्रारंभिक शताब्दी ईस्वी तक उपयोग में रहा। 💱
- **प्रतीकात्मक मूल्य:** सिक्कों पर अंकित प्रतीक उनके मूल्य और प्रामाणिकता को दर्शाते हैं। 📊✅
- **विनिमय के वैकल्पिक साधन:** वस्तु विनिमय प्रणाली भी प्रचलित थी, जैसा कि संगम संग्रह की एक कविता में वर्णित है। 🔄

तटों पर नये साम्राज्य

भौगोलिक विशेषताएं: 🏞️ भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिणी आधे हिस्से के तटीय क्षेत्रों की विशेषता लंबी तटरेखा, पहाड़ियाँ, पठार और उपजाऊ नदी घाटियाँ, विशेषकर कावेरी नदी घाटी थीं।

- **शासक परिवार:** 🔥 संगम कविताओं में मुवेंदार का उल्लेख है, जो तीन शासक परिवारों के प्रमुखों को संदर्भित करता है: चोल, चेर और पांड्य। ये परिवार लगभग 2300 वर्ष पहले दक्षिण भारत में सत्ता में आये।
- **शक्ति के दोहरे केंद्र:** 🏰 प्रत्येक शासक परिवार के पास शक्ति के दो केंद्र थे, एक अंतर्देशीय और एक तट पर। पुहार या कावेरीपट्टिनम चोलों के लिए बंदरगाह शहर के रूप में कार्य करता था, जबकि मदुरै पांड्यों की राजधानी थी।
- **तटीय राज्यों के कार्य:** 🌍 तटीय साम्राज्य व्यापार, प्रशासन और धार्मिक और राजनीतिक शक्ति के केंद्र के रूप में कार्य करते थे। उन्होंने व्यापार मार्गों को नियंत्रित किया, धन संचय किया और पड़ोसी क्षेत्रों पर प्रभाव डाला।
- **आर्थिक गतिविधियाँ:** 🎁 इन तटीय क्षेत्रों में शिल्प उत्पादन, व्यापार और समुद्री गतिविधियाँ महत्वपूर्ण थीं, जिन्होंने नए राज्यों की समृद्धि और शक्ति में योगदान दिया।
- **धन वितरण:** 💰 शासकों ने अपने समर्थकों, जिनमें परिवार के सदस्य, सैनिक और कवि शामिल थे, के बीच धन का वितरण किया। उन्होंने लोगों से उपहार भी प्राप्त किए, सैन्य अभियानों पर गए और आसपास के क्षेत्रों से श्रद्धांजलि एकत्र की।

समुद्रगुप्त

- 📜 प्रशस्ति: शासकों की प्रशंसा करने वाले विशेष प्रकार के संस्कृत शिलालेख
- 👑 गुप्त काल में महत्व: शासकों के गुणों और उपलब्धियों की प्रशंसा करना
- 🏛️ सामग्री: शासकों को योद्धा राजाओं, विद्वान व्यक्तियों और कवियों के रूप में चित्रित करें
- 🌳 वंशावली संबंधी जानकारी: इसमें शासकों और पूर्वजों के बारे में विवरण शामिल हैं
- 🏹 अंतर्दृष्टि: नीतियों, विजय और प्रशासनिक व्यवस्थाओं के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करें
- 🌍 सामाजिक गतिशीलता: प्राचीन काल में सामान्य लोगों के जीवन पर प्रकाश डालें

👑 समुद्रगुप्त एक योद्धा राजा था जिसका शरीर युद्ध के घावों से ढका हुआ था, जो अपनी जीत और काव्य क्षमताओं के लिए जाना जाता था।

- 🌍 उनके साम्राज्य में आर्यावर्त, दक्षिणापथ, पड़ोसी राज्य और बाहरी क्षेत्रों के शासक शामिल थे।
- 📜 प्रशस्ति में चार प्रकार के शासकों का उल्लेख है: आर्यावर्त, दक्षिणापथ, पड़ोसी राज्य और बाहरी क्षेत्र।
- 👨‍👩‍👧‍👦 प्रशस्ति में समुद्रगुप्त की वंशावली, जिसमें उनकी माता कुमारा देवी और पिता चंद्रगुप्त भी शामिल हैं, विस्तृत है।
- 🏹 उन्होंने पश्चिमी भारत में एक अभियान का नेतृत्व किया, जिसमें अंतिम शकों को हराया।
- 💬 उनकी प्रशस्ति उनके नियंत्रण में विभिन्न शासकों और क्षेत्रों के प्रति उनकी नीतियों की अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।
- 📝 प्रशस्ति को एक योद्धा, राजा और कवि के रूप में प्रशंसा करते हुए लंबे वाक्यों में लिखा गया था।

- 👑 प्रशस्तियों में चार प्रकार के शासकों का उल्लेख है: आर्यावर्त, दक्षिणापथ, पड़ोसी राज्य और बाहरी क्षेत्र, प्रत्येक की समुद्रगुप्त के साथ अलग-अलग बातचीत थी।
- 🏰 आर्यावर्त के शासकों को उखाड़ फेंका गया और उनके राज्यों को समुद्रगुप्त के साम्राज्य का हिस्सा बना लिया गया, वे कर लेकर आते थे और उनके दरबार में उपस्थित होते थे।
- 🏞️ दक्षिणापथ के बारह शासकों ने हार के बाद समुद्रगुप्त के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, और उन्हें फिर से शासन करने की अनुमति दी गई।
- 🌍 असम, तटीय बंगाल और नेपाल सहित पड़ोसी राज्यों के आंतरिक मंडल, श्रद्धांजलि लेकर आए और उनके दरबार में उपस्थित हुए।
- 💠 कुषाणों और शकों के वंशजों सहित बाहरी क्षेत्रों के शासकों ने समुद्रगुप्त के सामने समर्पण कर दिया और विवाह में अपनी बेटियाँ पेश कीं।

हर्षवर्द्धन

👑हर्षवर्धन अपने पिता और बड़े भाई की मृत्यु के बाद थानेसर के राजा बने और बाद में अपने जीजा की मृत्यु के बाद उन्होंने कनौज पर अधिकार कर लिया।

- ⚔️ उन्होंने पूर्व में एक सफल अभियान का नेतृत्व किया, मगध और संभवतः बंगाल पर विजय प्राप्त की, लेकिन दक्कन में चालुक्य शासक के प्रतिरोध का सामना करना पड़ा।
- 📜 उनके दरबारी कवि बाणभट्ट की जीवनी "हर्षचरित्र" हर्षवर्द्धन की वंशावली, सत्ता में वृद्धि और शासन के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।
- 🌍 चीनी तीर्थयात्री जुआन जांग द्वारा हर्षवर्द्धन के दरबार का विस्तृत विवरण उनके शासन और उस समय की सामाजिक गतिशीलता के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
- 🏰हर्षवर्धन के शासन को पूर्व में विजय, अपने राज्य का विस्तार करने के प्रयास और पड़ोसी शासकों के साथ बातचीत द्वारा चिह्नित किया गया था।

विक्रम संवत्

58 ईसा पूर्व में प्रारंभ होने वाले विक्रम संवत् को परंपरागत रूप से गुप्त राजा चन्द्रगुप्त द्वितीय के नाम से जोड़ा जाता है और ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने शकों पर विजय के प्रतीक के रूप में इस संवत् की स्थापना की तथा विक्रमादित्य की उपाधि धारण की थी।

दक्षिणी राज्य

- 🏛️ प्रशस्तियाँ पल्लवों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं, जो कावेरी डेल्टा की राजधानी के आसपास के क्षेत्र में कांचीपुरम के आसपास केंद्रित हैं, और चालुक्य, जिनकी राजधानी ऐहोल है, जो कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच रायचूर दोआब में स्थित हैं, उनके संघर्षों और पर प्रकाश डालते हैं। छापेमारी.
- 🗺️ प्रशस्तियों से संकेत मिलता है कि पल्लव और चालुक्य दोनों अंततः राष्ट्रकूट और चोल राजवंशों के नए शासकों द्वारा सफल हुए, जिन्होंने क्षेत्र के भौगोलिक और राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया।
- 🏛️ प्रशस्तियाँ कांचीपुरम के आसपास केंद्रित पल्लवों और ऐहोल को अपनी राजधानी बनाने वाले चालुक्यों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं, और उनके संघर्षों और छापों पर प्रकाश डालती हैं।
- 👑 सबसे प्रसिद्ध चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय का विवरण उनके दरबारी कवि रविकीर्ति द्वारा रचित एक प्रशस्ति में दिया गया है, जिसमें उनकी विजय और पल्लव राजा पर जीत पर प्रकाश डाला गया है।
- 🌍 प्रशस्तियों से संकेत मिलता है कि पल्लव और चालुक्य दोनों के बाद राष्ट्रकूट और चोल राजवंशों के नए शासक आए।

राज्यों में प्रशासन

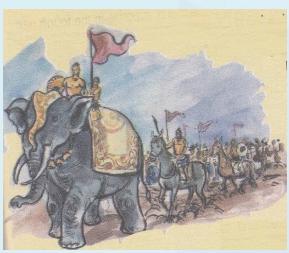

- 🏛️ भूमि राजस्व और मूल इकाई के रूप में गांव उल्लिखित राज्यों में प्रशासन के महत्वपूर्ण पहलू थे, जिसमें महत्वपूर्ण पदों की वंशानुगत प्रकृति और कई कार्यालयों को रखने वाले व्यक्तियों सहित नए विकास शामिल थे।
- ⚔️ शासकों ने हाथियों, रथों, घुड़सवारों और पैदल सैनिकों से युक्त एक सुव्यवस्थित सेना बनाए रखी, जिसमें सामंतों के नाम से जाने जाने वाले सैन्य नेता राजस्व संग्रह और सैनिकों और घोड़ों के रखरखाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।
- 🏰 अमीर और शक्तिशाली जमींदारों और व्यापारियों द्वारा नियंत्रित सभा, उर और नगरम सहित स्थानीय सभाएँ सिंचाई, कृषि संचालन, सड़क निर्माण और स्थानीय मंदिरों के प्रबंधन जैसे विभिन्न कार्यों के लिए जिम्मेदार थीं।

दक्षिणी साम्राज्य में स्थानीय सभाएँ

- 🏛️ पल्लवों के शिलालेखों में दक्षिणी राज्यों में कई स्थानीय सभाओं का उल्लेख है, जिनमें सभा, उर और नगरम शामिल हैं, जो संभवतः अमीर और शक्तिशाली जमींदारों और व्यापारियों द्वारा नियंत्रित थे।
- 👥 इन सभाओं ने दक्षिणी राज्यों के प्रशासन और शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, सिंचाई, कृषि संचालन, सड़क निर्माण और स्थानीय मंदिरों के प्रबंधन जैसे विभिन्न पहलुओं की देखरेख की।

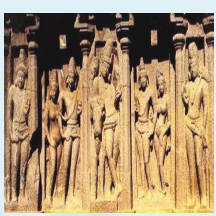

आम लोगों का जीवन

- 🎭 कालिदास के नाटक राजा के दरबार में जीवन को दर्शाते हैं, विभिन्न पात्रों के लिए अलग-अलग भाषाओं का उपयोग करते हैं, प्राचीन काल के राज्यों में लोगों के जीवन की झलक प्रदान करते हैं।
- 🙏 चीनी तीर्थयात्री फा जियान ने अछूतों की दुर्दशा देखी, जिनसे शहर के बाहरी इलाके में रहने की उम्मीद की जाती थी, जबकि पल्लवों के शिलालेखों में स्थानीय सभाओं का उल्लेख है जो संभवतः अमीर और शक्तिशाली जमींदारों और व्यापारियों द्वारा नियंत्रित थीं, जो स्थानीय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। शासन·
- 🏞️ दस्तावेज़ शासक वर्ग के साथ उनकी बातचीत, सेना के आंदोलनों के प्रभाव और उनके दैनिक जीवन में आने वाली चुनौतियों के माध्यम से आम लोगों के जीवन में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

अध्याय 10
इमारतें, चित्र तथा किताबें

🏛️ दिल्ली के महरौली में लौह स्तंभ, भारतीय शिल्पकारों के उल्लेखनीय कौशल का प्रमाण है, जिसका वजन 3 टन से अधिक है और इसकी ऊंचाई 7.2 मीटर है। लगभग 1500 साल पहले तैयार किया गया, यह प्राचीन भारतीय धातुविदों द्वारा महारत हासिल की गई उन्नत लौह-फोर्जिंग तकनीकों को प्रदर्शित करता है।

📜 लौह स्तंभ पर एक शिलालेख है जो चंद्र नामक शासक का उल्लेख करता है, जो संभवतः गुप्त राजवंश से जुड़ा हुआ है, जो इसके निर्माण और जिस युग का यह प्रतिनिधित्व करता है, उसके लिए मूल्यवान ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करता है।

⚒️ प्राचीन भारतीय धातुविदों ने धातु विज्ञान के वैश्विक इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पुरातत्व उत्खनन से तांबे की धातु विज्ञान में हड़प्पावासियों की महारत का पता चला है, जिसमें तांबे और टिन के मिश्रण से कांस्य का उत्पादन भी शामिल है।

⚙️ भारत के प्राचीन धातुविदों ने लोहे के विभिन्न उन्नत रूपों, जैसे जाली लोहा, गढ़ा लोहा और कच्चा लोहा का उत्पादन करने में उत्कृष्टता हासिल की, जो इस क्षेत्र में उनकी असाधारण विशेषज्ञता और तकनीकी कौशल को रेखांकित करता है।

🏛️ प्राचीन भारत में कुशल कारीगरों ने स्तूप और मंदिरों सहित ईंट और पत्थर से इमारतों का निर्माण किया, जिनकी शुरुआत उनकी महंगी प्रकृति के कारण राजाओं या रानियों द्वारा की गई थी।

🏗️ निर्माण प्रक्रिया में कई चरण शामिल थे, जिसकी शुरुआत उच्च गुणवत्ता वाले पत्थर की खोज और उत्खनन से हुई, जिसे बाद में निर्दिष्ट निर्माण स्थल पर ले जाया गया।

खुरदरे पत्थर के खंडों को सटीकता के साथ स्थापित करने से पहले सावधानीपूर्वक आकार दिया गया था और स्तंभों, दीवार पैनलों, फर्श और छत जैसे विभिन्न वास्तुशिल्प तत्वों में नक्काशी की गई थी।

💰 राजाओं और रानियों ने शाही खजाने से शिल्पकारों को पारिश्रमिक देकर निर्माण का वित्तपोषण किया, जबकि भक्त अक्सर इमारतों को सजाने के लिए उपहार देते थे।

🏛️ स्तूपों और मंदिरों के निर्माण के लिए सावधानीपूर्वक योजना और कुशल शिल्प कौशल की आवश्यकता होती है, जिसमें गर्भगृह में मुख्य देवता की छवि को सर्वोपरि महत्व दिया जाता है।

🛕 मंदिरों में एक मंडप भी होता है, जो एक सभा कक्ष के रूप में कार्य करता है, और अक्सर पवित्र स्थान को दर्शाने के लिए एक शिखर टॉवर का दावा करता है।

🕌 कुछ सबसे असाधारण पत्थर के मंदिर महाबलीपुरम और एहोल जैसे शहरों में बनाए गए थे, जो प्राचीन भारत की वास्तुकला और कलात्मक उपलब्धियों के प्रमाण के रूप में काम करते थे।

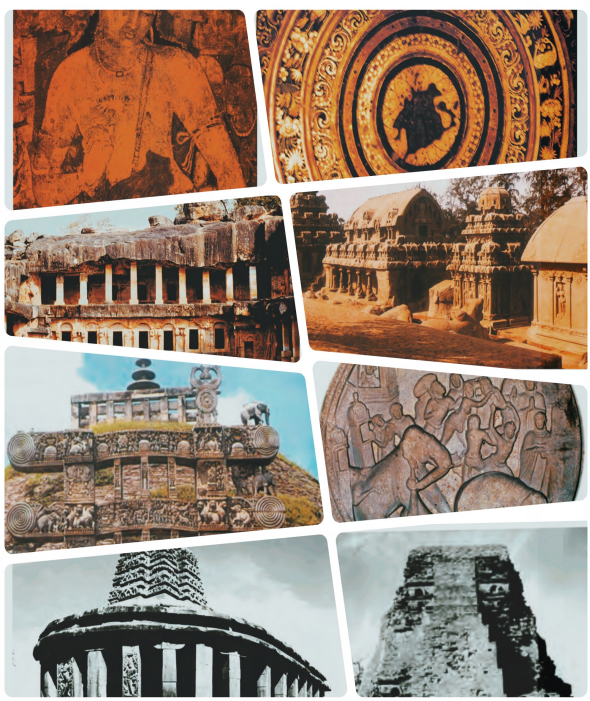

🎨 सदियों से गुफाओं में बनाई गई अजंता की पेंटिंग्स को पौधों और खनिजों से बने ज्वलंत रंगों का उपयोग करके निष्पादित किया गया था, जो 1500 वर्षों के बाद भी ज्वलंत बने रहे।

👨‍🎨 कला के इन शानदार कार्यों के पीछे के कलाकार अज्ञात हैं, जिससे चित्रों के ऐतिहासिक महत्व में रहस्य और साज़िश का माहौल जुड़ गया है।

📖 जातक कथाओं को अक्सर अजंता जैसे स्थानों पर स्तूपों की रेलिंग और चित्रों में चित्रित किया गया था, जो प्राचीन कथाओं और सांस्कृतिक विरासत में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते थे।

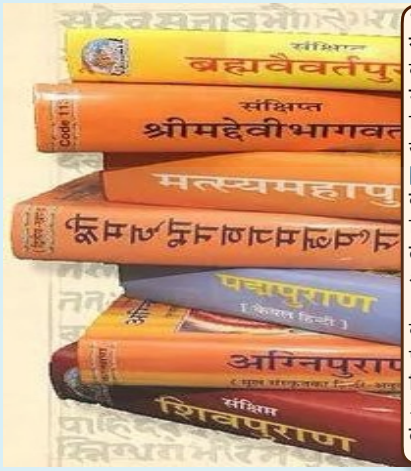

📚 **पुराण अवलोकन:**

सामग्री: हिंदू देवताओं (विष्णु, शिव, दुर्गा, पार्वती) के बारे में कहानियां, सृजन मिथक, और पूजा अनुष्ठानों का विवरण।

भाषा और वाचन: सरल संस्कृत श्लोक में लिखा गया है, जिसे सभी के लिए आसानी से समझने के लिए डिज़ाइन किया गया है। सार्वजनिक उपभोग के लिए अक्सर पुजारियों द्वारा मंदिरों में इसका पाठ किया जाता है।

📖**महाभारत**:

कथा: कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध का इतिहास, चचेरे भाई कुरु सिंहासन और हस्तिनापुर पर नियंत्रण के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे थे।

लेखकत्व: व्यास द्वारा लगभग 1500 वर्ष पूर्व संकलित; इसकी कथा में प्रसिद्ध दार्शनिक संवाद, भगवद गीता शामिल है।

📕**रामायण**:

कहानी: राजकुमार राम के कोसल से निर्वासन और लंका के राजा रावण द्वारा उनकी पत्नी सीता के अपहरण पर केंद्रित है।

विजय और वापसी: रावण के खिलाफ राम की विजयी लड़ाई, सीता को बचाना, और कोशल की राजधानी अयोध्या लौटना।

लेखकत्व: वाल्मिकी द्वारा लिखित, एक प्राचीन लेकिन लिखित कथा का विवरण।

📚 साधारण लोग कहानी सुनाने, कविताएं और गीत लिखने, गाने, नृत्य करने और नाटकों का प्रदर्शन करने में लगे हुए थे, इनमें से कुछ जातक और पंचतंत्र जैसे संग्रहों में संरक्षित थे, जिन्हें इस समय के आसपास प्रलेखित किया गया था।

📖 जातक कथाओं को अक्सर स्तूपों की रेलिंगों और अजंता जैसे स्थानों पर चित्रों में चित्रित किया गया था, जो दृश्य कला और स्थापत्य तत्वों में इन कथाओं के एकीकरण को प्रदर्शित करता था।

🌌**वराहमिहिर**:

योगदान: ज्योतिष और गणित में अपने काम के लिए प्रसिद्ध।

उल्लेखनीय कार्य: "बृहत् संहिता" में ज्योतिष, खगोल विज्ञान, भूगोल और अन्य सहित विभिन्न विषयों को शामिल किया गया है।

🔢**ब्रह्मगुप्त**:

योगदान: शून्य की अवधारणा सहित बीजगणित में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उल्लेखनीय कार्य: अंकगणित, बीजगणित और खगोल विज्ञान को संबोधित करते हुए "ब्रह्मस्फुटसिद्धांत" के लेखक।

📐**भास्कराचार्य**:

योगदान: बीजगणित, त्रिकोणमिति और कलन में अग्रणी प्रगति की।

उल्लेखनीय कार्य: अंकगणित और बीजगणित पर क्रमशः "लीलावती" और "बीजगनिता" महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे।

🌿 आयुर्वेद, प्राचीन भारत में विकसित एक प्रसिद्ध स्वास्थ्य विज्ञान प्रणाली, दो प्रसिद्ध चिकित्सकों, **चरक** (पहली-दूसरी शताब्दी सी.ई.) और **सुश्रुत** (लगभग चौथी शताब्दी सी.ई.) द्वारा विकसित की गई थी।

📚 चरक द्वारा लिखित चरक संहिता, चिकित्सा पर एक उल्लेखनीय पुस्तक है, जबकि सुश्रुत का ग्रंथ, सुश्रुत संहिता, प्राचीन भारतीय चिकित्सा ज्ञान की गहराई और चौड़ाई को प्रदर्शित करते हुए, विस्तृत शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं का वर्णन करता है।

🔢 भारत में गणितज्ञों ने शून्य के लिए एक विशेष प्रतीक का आविष्कार किया, जिसने गिनती की प्रणाली में क्रांति ला दी। शून्य की अवधारणा सहित यह अंक प्रणाली अरबों द्वारा अपनाई गई और बाद में यूरोप में फैल गई, जहां यह दुनिया भर में उपयोग में जारी है।